Politics of Developing Countries – Challenges and Possibilities

विकासशील देशों की राजनीति – चुनौतियां एवं संभावनाएं

Dr. Amrit Lal Chandrabhash,

Political Science, Government Lal Chakradhar Shah Late. College Ambagarh Chowki

डॉ अमृत लाल चंद्रभाष
(सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान)
शोधार्थी :– राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय लाल चक्रधर शाह स्ना. महाविद्यालय अम्बागढ़ चौकी
Email :- alchandrabhas888@gmail.com

प्रस्तावना

विकासशील देश एक ऐसे देश को कहेगें जो बेहतर औद्यौगीकरण, आर्थिक विकास और अपनी आबादी के लिये जीवन स्तर में सुधार का काम करने के लिये बेहतर ढंग से नियोजित योजना बद्ध काम करते हुये विकास के पथ पर आगे बढ़ रहे है। विकासशील देश अपनी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं को मजबूत करने की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहे है। ये देश आम तौर पर निम्न जीवन स्तर, कम औद्योगीकरण तथा कम प्रति व्यक्ति आय वाले देश है। जो अपने देश की सामाजिक संरचना एवं राजनीतिक संरचना में बदलाव करते हुये, अपने देश की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये आगे बढ़ते हुये अर्थव्यवस्था में सुधार करना और उसे आगे बढ़ाना, प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढ़ांचे में सुधार करना तथा अपने देश के नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाना और उसे ऊपर उठाना है। विश्व बैंक के अनुसार विकासभील देश जिसका प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय जी.एन.आई. द्वारा निम्न और उच्च के मध्य, मध्यम आय समूहों वाले देश को विकासभील देश की श्रेणी में रखा है। **संयुक्त राष्ट्र संघ की विभोषज्ञ समिति का रिपोर्ट** '' विकासशील देशों की गणना उन देशों में की जाती है जिनकी प्रति व्यक्ति वास्तविक आय अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया व पश्चिमी यूरोप की प्रति व्यक्ति वास्तविक आय से कम पायी जाती है।''

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र के लिये शोध सामग्री अधिकांश रूप से द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गयी है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेशण व वर्णात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

शोध का उद्देश्य :–

1. विकासशील देशों की आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।
2. विकासशील देशों की चुनौतियों को प्रदर्शित करना।
3. विकासशील देशों की चुनौतियों में सुधार करने की सुझाव देना।
4. प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करने को प्रोत्साहित करना।
5. विकास के लिये जो चुक हुई है उसे समाज एवं शासन स्तर पर सुधार करना।

विकासभील देशों की विशेषताएं एवं चुनौतियां :– विकासशील देशों की समस्याओं का विश्लेशण करने पर उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विशेषताएं स्पष्ट रूप से झलकने लगता है।

कम प्रति व्यक्ति आयः– विकासशील देशों में अक्सर प्रति व्यक्ति आय कम प्रदर्शित होता है। आर्थिक विकास की दृष्टि से संसार को तीन वर्गों में बाट सकते है। विकसित देश, विकासशील देश एवं अविकसित देश। विश्व के लगभग 4 अरब व्यक्ति रहते है, जिसमें केवल 20 प्रतिशत व्यक्ति ही विकसित देशों में निवास करते है। बाकि 80 प्रतिशत व्यक्ति निर्धनता के स्तर पर जीवन यापन करते है।

गरीबी का उच्चतम स्तर :– गरीबी का उच्चतम स्तर विकासशील देशों का एक बहुत बड़ी विशेषता है। इन देशों में आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी रेखा के नीचे रहता है। इन गरीबी का कारण अक्सर असमान धन वितरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधा का आभाव, मूलभूत सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाना आदि से लगाया जा सकता है।

सामाजिक पिछड़ापन :– सामाजिक पिछड़ापन से तात्पर्य परम्परागत जीवन शैली, सामाजिक रूढ़ियां बहुत अधिक होना, धार्मिक अंधविभवास में ज्यादा रूचि रखना, निरक्षरता, कुपोषण का शिकार होना, जाति प्रथा, निम्न संस्कृति , जनता का आलसी पन, संयुक्त परिवार प्रथा, ग्रामीण कृषि निर्भरता, समाज में स्त्रियों की स्थिति का निम्न होना, परिवर्तन विरोधी वातावरण, नवीन अनुसंधान के प्रति उत्साह नहीं, सामाजिक मतभेद एवं संघर्ष का चरम रूप, परम्परागत अर्थव्यवस्था पर निर्भरता आदि

जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर :– विकासशील देशों में जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर विकसित देभाों की तुलना में बहुत ज्यादा ऊंचा होना है। सन् 1960–66 की अवधि में विकसित देशों की जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर 12 प्रतिशत रह है, और विकासशील देशों में यह प्रतिशत 25 प्रतिशत थी। वर्तमान में यह दर और अधिक बढ़ गई है। इस प्रकार विकासशील देशों में जनसंख्या विस्फोटक की अवस्था में पहुच गयी है।

प्राकृतिक संसाधनों का कम उपयोग :– विकासशील देभाों में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। लेकिन इन प्राकृतिक संसाधन का समुचित उपभोग नहीं हो पाता है। प्राकृतिक संसाधन के उपभोग के लिये तकनीकी ज्ञान का अभाव रहा है। सामाजिक पिछड़ेपन के कारण इन प्राकृतिक संसाधन का दोहन नहीं हो पाता है।

कृषि पर निर्भरता :– विकासशील देशों में कृषि पर निर्भरता अधिक होता है। कृषि में कार्यशील जनसंख्या का 70 प्रतिशत से अधिक भाग कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। कृषि जीवन निर्वाह का साधन मात्र है। कृषि पर निर्भरता का कारण यह है कि अर्थव्यवस्था के द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र पूंजी, तकनीक, साहसवृति व उपक्रम प्रवृति के आभाव के कारण अविकसित बने रहते है। कृषि में कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत उच्च होने के बावजूद कुल राष्ट्रीय आय में इसका योगदान अल्प ही बना रहता है।

धीमी और असंतुलित औद्योगिक वृद्धि :– विकासशील देशों में औद्योगिक क्षेत्र में विकास धीमी व असंतुलित वृद्धि होती है। इसका कारण है पुंजी, साहसवृति व नवप्रर्वतन योग्यता का आभाव, बेहतर व कारगर तकनीक का प्रयोग समभव न होना, औद्योगिक सुरक्षा का आभाव, प्रबंधको व श्रमिक वर्ग के मध्य अच्छे संबंध का विद्यमान न होना साथ ही औद्योगिक नेतृत्व की कमी होना है।

निम्न श्रम उत्पादकता :– विकासशील देशों में निम्न श्रम उत्पादकता अर्द्धविकास का लक्ष्ण एवं कारक है। श्रम उत्पादकता के न्यून होने का मुख्य कारण श्रमिकों के जीवन स्तर निम्न होना, इससे उन्हें समुचित पोषण नहीं प्राप्त होता उनके आवास, स्वास्थ्य, साफ–सफाई की दशा दीन हीन होना, कार्य करने की प्रेरणाओं का अभाव, कुशलता पूर्ण निर्माण के सीमित अवसर, पूंजी की न्युनता व संस्थागत प्रबंधों की दुर्बल दशा से अल्प उत्पादन की प्रवृत्तियां दिखायी देती है।

आय व सम्पत्ति वितरण में असमानताएं :– विकासशील देशों में आय एवं सम्पत्ति के वितरण में असमानताएं विद्यमान होती है, अर्थात समाज के एक छोटे वर्ग के पास देश की सम्पत्ति व संसाधनों का अधिकांभा भाग विद्यमान होता है, तथा समाज का अधिकांभा भाग जीवन निर्वाह स्तर पर गुजरा करता है। विकसित देशों में सरकार करों के माध्यम से तथा श्रमिक संघों के कार्यवाहियों से आय के स्तर को समान बनाने के लिए प्रयास करता है। विकासशील देशों में इस दिशा में सार्थक प्रयास नहीं हो पाता। आय की असमानता होने के कारण से गरीब और अधिक गरीब हो रहा है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास का आभाव :– विकासशील देशों के समक्ष यह भी चुनौती है, कि ये देश आज भी वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि से पिछड़े हुये हैं। विकसित देशों की तरह विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में जिस गति से विकास किया है। वह विकास पिछड़े हुये देशों एवं विकासशील देशों में कहीं नहीं दिखता।

बौद्धिक पलायन की समस्या :– विकासशील देशों में बौद्धिक पलायन बहुत ज्यादा देखने को मिलता है। इस देश के पढ़े लिखे युवा अपने को छोड़कर विदेश में नौकरी की तलास में विदेश जा रहे है। उसे अपने देश में जो पैकेज मिलना चाहिये वह नहीं मिल पाता। विकसित देश अच्छा पैकेज दे कर लुभा लेते हैं। इस कारण से पढ़े लिखे युवा विदेश में नौकरी करना अपना शान समझता है।

प्रशासनिक उदासीकरण एवं अनावश्यक हस्तक्षेप :– विकासशील देशों में प्रशासनिक हस्तक्षेप अत्यधिक होने के कारण यहां की वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजिनियर , प्रोफेसर आदि अपने कार्य करने की आजादी में अनावश्यक रूकावट महशुस करते है। जिस तरह से उनको कार्य करने की स्वतंत्रता, आजादी मिलनी चाहिये वह नहीं मिल पाता।

विकासशील देशों के बीच आपसी वैमनश्यता :– विकासशील देशों के बीच आपसी वैमनश्यता तथा खींचातानी बना रहता है, इस कारण से इन देशों के बीच तनाव एवं छुटपुट लड़ाई होने की संभावना अधिक बना होता है। इस लिये इन देशों के मघ्य आपसी सहयोग नहीं बन पाता और ये आपस में लड़ते रहते है। और यही इनका पिछड़ापन का कारण है।

दलबंदी या दलीय राजनीति :– विकासशील देशों की राजनीति सत्ता के लिये संघर्ष दलगत राजनीति के कारण से कभी–कभी खुनी संघर्ष हो जाता है। विकासशील देश दलीय राजनीति के इर्द गिर्द चक्कर लगाते रहते है।

विकासशील देशों की राजनीति :– विकासशील देशों की राजनीति सत्ता के लिये संघर्ष में लगा रहता है। आये दिन सत्ता परिवर्तन होते रहते है। राजनेताओं का मुख्य उद्देश्य सत्ता सुख भोगना एवं आपस में एक दुसरे को लड़ना होता है। स्थानीय मुद्दा हावी रहता है। परम्परागत राजनीति में संलिप्त होते है। नाम मात्र का जनता को अधिकार होता है। जनता मूलभूत समस्याओं से जूझ रहे है। जनता कभी पानी के लिये आंदोलन कर रहे हैं, तो कभी सड़क के लिये, शिक्षा स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय आय की बहुत कम प्रतिशत खर्च होता है। विकासशील देश अपनी देश की साक्षरता दर बढ़ाने में लगे हुये है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अभी कोशों दूर है। डिफेन्स में सबसे ज्यादा खर्च होता है, इन देशों की राजनीति के लिये बहुत सारे अभिशाप भी है। विकासशील देश की राजनीति में भाई–भतीजवाद, परिवारवाद, जातीयवाद, सम्प्रदायवाद, धार्मिक संकिर्णता, अंधविश्वास, भ्रष्टचार, मॉबलिंचिंग, बालिका अपहरण, महिलाओं का शोषण, शासन की क्रूरता एवं तानाशाही, दलबंदी आदि अपने चर्मोत्कर्ष पर है। जब कहते हैं न कि जब रोम जल रहा है नीरो सचमुच में बंशी बजा रहा था। इसी तरह से इन देशों की राजनीति भी है।

विकासशील देशों की संभावनाएं :– विकासशील देशों के पास आकूट प्राकृतिक खनिज संसाधन, लौह अयस्क, कोयला, चूना, अभ्रक, युरेनियम, सोना, चांदी, तांबा, सिल्वर, धत्विक, अधात्विक प्राकृतिक संसाधनों की विशाल भंडार है, जरूरत है, इसके सही दोहन करने की, नदी जल की जाल बिछा हुआ है। पहाड़ जंगल, मैदान कृषि योग्य जमीन, उपजाऊ मिट्टी ,नदी घाटी, विविध प्रकार के जीव जन्तु, कीड़े मकोड़े

आदि का विशाल भण्डार भरा पड़ा। इन सभी संसाधनों का मानव आवश्यकाता अनुसार दोहन करना। देश के विकास के लिये औद्योगीकरण को बढ़ावा देना, यातायात एवं संचार संसाधनों में वृद्धि करना, वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में विकास की संभावना को बढ़वा देनौ। **महात्मां गांधी कहता है कि इस संसार में इतनी भौतिक संसाधन भरा पड़ा है कि इस धरती पर रहने वाले सभी लोगों की आवश्यकाताओं की पूर्ति कर सकता है किन्तु एक व्यक्ति की लालच को पूरा नही कर सकता है।** प्रत्येक मनुष्य को अपनी आपसी मतभेद को छोड़ कर एक दूसरे की सहयोग करते हुये, सहयोगात्मक भावनाओं से आगे बढ़ना चाहिये। इससे देश एवं समाज का उत्थान होगा। राजनेताओं को अपनी सुख सुविधओं को त्याग कर, समाज के लिये सच्चा साधक बन कर राष्ट्र उत्थान में अपना सर्वांग न्योक्षावर कर देना चाहिये। समाज के जितने प्रकार के बुराई हो उसे समाप्त करने के लिये कठोर प्रयास करना चाहिये। आम जनता को अधिक से अधिक नागरिक अधिकार मिलना चाहिये। तानाशाही और अत्याचार का कहीं समर्थन न हो, भाई–भतीजवाद, परिवारवाद, जातीयवाद, सम्प्रदायवाद, धार्मिक संकिर्णता, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, मॉबलिंचिंग, बालिका अपहरण, महिलाओं का शोषण, शासन की क्रूरता एवं तानाशाही आदि बुराइयों का अंत करने के लिये कठोर कानून बनाना चाहिये। शिक्षा और स्वस्थ्य पर अधिक ध्यान केद्रित करना चाहिये। आम नागरिकों को भी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठ कर शासन के कार्यों में सहभागिता बढ़ना चाहिये। प्रशासन को तटस्थ हो कर अपना काम करना चाहिये, शासन की जी हुजूरी में अपना समय व्यर्थ न गवायें, देश को संविधान के आधार पर काम करने से ही जनता का भला हो सकता है, और एक भय मुक्त समाज की स्थापना कर सकते है। विकासशील देशों की उल्लेखित कुछ चुनौती है, उसे दूर कर एक विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकते है। दलीय राजनीति से दूर रहना चाहिये।

संदर्भग्रंथ :–

1. एस्पेक्ट ऑफ पोलिटिकल डेवलपमेंन्ट, लुसियन पाई।
2. पोलिटिकल कल्चर एंड पोलिटिकल डेवलपमेन्ट, लुसियन पाई।
3. डेमोक्रेसी एण्ड डेवलपमेन्ट इन फ्राम : सोशलिज्म टू प्रो बिजनेस, अतुल कोहली।
4. द पॉलिटिकल ऑफ द डेवलपिंग एरियाज, ग्रैबियल अब्राहम।
5. पोलिटिकल डेवलपमेन्ट(1970) ग्रैबियल अब्रहम।
6. विकीपिडिया।
7. राजनीतिक सिद्धांत की रूपरेखा, ओ. पी. गाबा।
8. ई ज्ञानकोश।
9. राजनीतिक सिद्धांत, आसीर्वादम।
10. तुलनात्मक राजनीति, चन्द्रदेव प्रसाद।
11. तुलनात्मक शासन एवं राजनीति डॉ. बी. एल. फड़िया।
12. तुलनात्मक रानीति की रूपरेखा, ओ.पी गाबा।
13. डेमोक्रेसी इन डेवलपिंग कण्ट्री : एशिया, डायूण्ड लेरी।
14. डेवलपिंग नेशन्स एण्ड द पोलिटिकलस ऑफ ग्लोबल इन्टरग्रेशन, स्टेफन हगार्ड।
15. वुमेन इन डेवलपिंग कण्ट्री, कैथलिन अ. स्टडस एण्ड जॉन एस. जाक्युते।
16. दक्ष त्यागी, अ नेशन आफ आइडियास।
17. गोपाल राय, सकारात्मक राष्ट्रवाद।
18. डॉ. दवीस, पानदान वर्गीस, राजनीति विज्ञान थियरी एण्ड थॉट।